आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2018-2020

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2186 • उदयपुर, शुक्रवार 18 दिसम्बर, 2020 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

दो साल में 335 धार्मिक ग्रंथ डिजिटल किए

धार्मिक पुस्तकों के लिए पूरी दुनिया में मशहूर गीता प्रेस में काम कर चुके मेघ सिंह चौहान पिछले दो साल 335 धार्मिक ग्रंथ और किताबें डिजिटल कर चुके हैं।

जोधपुर के मूल निवासी मेघ सिंह चौहान 25 साल तक गीता प्रेस गोरखपुर में असिस्टेंट मैनेजर रहे। कुछ साल पहले उन्होंने गीता प्रेस की किताबों को ई–बुक में तब्दील करने की ठानी। संस्थान में नौकरी करते हुए यह संभव नहीं हुआ तो इसके लिए उन्होंने 2017 में गीता प्रेस की नौकरी छोड़ दी।

नौकरी छोड़ने के बाद भी उन्हें कई जगहों से लाखो रुपए महीने के पैकेज का ऑफर मिला, लेकिन उन्होंने ठुकरा दिया। उद्देश्य एक ही था युवाओं के हाथ में मोबाइल है तो इस मोबाइल में युवा पीढ़ी को संस्कार लाने वाली कुछ चीजें भी उपलब्ध करानी चाहिए।

जोधपुर लौटकर 2018 से उन्होंने गीता प्रेस की किताबों को डिजिटल प्लेटफार्म पर लाने के लिए काम शुरू किया। इसके लिए गीता सेवा ट्रस्ट एप बनाने के अलावा वेबसाइट, इंस्टाग्राम, फेसबुक, व्हाट्सअप पर लाने के लिए काम शुरू किया। इसके लिए लोगों की मदद से गीता सेवा ट्रस्ट बनाया और मात्र दो साल मे धर्म ग्रंथों की 335 पुस्तकों को हिंदी–अग्रेंजी की ई–बुक में बदल दिया। आज साढ़े 3 लाख लोग डिजिटल प्लेटफार्म से जुड़े हैं। 2021 तक अधिकांश क्षेत्रीय भाषाओं में गीता प्रेस की पुस्तकें उपलब्ध होगी, वो भी निःशुल्क। सबसे बड़ी खासियत, हर पुस्तक को पढ़ने के साथ हर शब्द का शुद्ध उच्चारण भी साथ–साथ सुनने को मिला है।

स्कैन की जगह हर शब्द को दोबारा टाइप किया गया

मेघ सिंह कहते हैं कि इन्हें पढ़ने के लिए पुस्तकों को धार्मिक ढंग से सहेजना भी होता है। हजारों पेजों की पुस्तकों को आसानी से पढ़ा जा सके, इसके लिए स्कैन करने की जगह हर शब्द को टाइप किया गया। 50 लोगों की टीम ने दिन–रात काम किया। लोगों की मदद से गीता सेवा ट्रस्ट बनाया और गीता प्रेस की अधिकांश पुस्तकें आज एक एप पर मुफ्त में ऑनलाइन उपलब्ध है। अन्य भाषाओं के लिए अब भी लोग घर में काम से काम कर रहे हैं।

जंगल में सांप-बिच्छुओं के लिए बनाया अनोखा पुल

उत्तराखंड मनोरम पर्वतीय नजारों और जंगलों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहां के गहन जगंलों में अनेक प्रजातियों के जीव जंतु निवास करते हैं। यहां जंगलों के बीच सड़कों से गुजरने वाले लोग हरियाली को निहार सकते हैं। बड़े जानवरों को देखकर वाहन चालक सतर्क हो जाते हैं, लेकिन सांप–बिच्छुओं और मॉनीटर लीजार्ड जैसे सरीसृपों के लिए ये सड़कें काल साबित हो रही है। इन्हें बचाने के लिए नैनीताल जिले में रामनगर क्षेत्र के प्रभागीय वनाधिकारी (डीएफओ) डॉ. चन्द्रशेखर जोशी ने अनोखा प्रयोग किया है। वन विभाग ने नैनीताल जाने के मुख्य मार्ग कालाढंगी–नैनीताल हाइवे पर छोटी हल्द्वानी से दो किलोमीटर आगे 90 फीट लंबा इको ब्रिज बनाया है। रेंगने वाले जीव जंतु पुल के जरिए सड़क पार कर सकते हैं।

यह है खासियत

यह इको फ्रेंडली पुल है। 10 दिन में 2 लाख रुपए की लागत से बांस, घास और रस्सी से इसे तैयार किया गया है। पुल 5 फुट चौड़ा और 40 फुट ऊंचा है। पुल करीब 3 व्यक्तियों का भार झेल सकता है। पुल पर कैमरे लगाए गए हैं।

इस तरह रिझाएंगे

सरीसृपों को पुल जरिए सड़क पार करवाना भी चुनौती है। इसके लिए वन विभाग ने अलग रास्ता निकाला है। जानवरों को जंगली रास्ते का आभास कराया जाएगा, इसलिए पुल पर बेल उगाने के साथ ही घास–पत्तिया लगाई गई हैं।

सेवा पथ पर आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मां-बेटी को लगाए कृत्रिम हाथ-पांव

वाक्या 13 नवम्बर 2014 का है। कमला कंवर अपनी बेटी और पति के साथ रूणीचा स्थित बाबा रामदेव जी के दर्शन करके मोटरसाइकिल से अपने घर पोकरण लौट रही थी कि सामने द्रुतगति से आ रही पिक–अप ने टक्कर मार दी। दुर्घटना इतनी भयकंर थी कि घटना स्थल पर ही पति रघुनाथ सिंह की मृत्यु हो गई। बीएसएफ छावनी के बाहर लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्थानीय लोगों ने बुरी तरह से घायल मां– बेटी को पोकरण जनरल हॉस्पीटल पहुंचाया। जहां मरहम–पट्टी के बाद उन्हें जोधपुर के मथुरादास माथुर हॉस्पीटल रेफर कर दिया गया।

हॉस्पीटल प्रशासन ने घायलों की गंभीर स्थिति को देखते हुए अहमदाबाद ले जाने की सलाह दी। जहां एक माह तक इलाज चला। बेटी पलका दायां पांव काटना पड़ा और कमला का दायां हाथ नााम (बिन मूमेंट) हो गया। करीब एक–डेढ साल बाद हाथ में संक्रमण होने से हाथ को डॉक्टरों की सलाह पर कटवाना पड़ा। नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रल्कपों व कृत्रिम अंग वितरण के बारे में सुनकर ये 26 अगस्त को उदयपुर आए जहां इन्हें कृत्रिम हाथ और पांव लगाए गए। मां–बेटी दिव्यांगता में राहत पार खुश हैं।

रवित हुआ कुण्ठा और दिव्यांगता से मुक्त

रवित कुमार (26) नेपुर बदांयूं के निवासी हैं। इने पिता राजकीय सेवा में है... परिवार में 6 सदस्य हैं। रवित ने बताया कि दिव्यांग होने के कारण मैं तनावग्रस्त रहने लगा। घर में मेरे अन्य भाई–बहिन सभी काम आराम से कर लेते थे पर मैं दिव्यांगता से मन ही मन घुटता रहता। टी.वी. पर देखे विज्ञापन पर मैं परिजनों के साथ उदयपुर आया.।

ऑपरेशन करवाया तो जिन्दगी में उत्मीद का अकुंरण हुआ.... मैं जीने के प्रति सोचने लगा.... मुझे भी दूसरे युवाओं की तरह कुछ काम करना चाहिए..... ऐसा सोच ही रहा था कि कोरोना लॉकडाउन लग गया। उसी दौरान नारायण सेवा संस्थान ने ऑनलाइन मोबाइल रिपेयरिंग क्लास आरम्भ की। मैंने बिना वक्त खोए पंजीयन करवा लिया। पूरी शिददत से कोर्स किया परीक्षा में आए नम्बरों से मुझे यकीन हो गया कि मैं मोबाइल ठीक करना सीख गया हूं। अब घर से ही पड़ौसियों के मोबाइल सही करने लगा हूं.... अपनी खुशी को शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूं। नारायण सेवा ने मेरी जिन्दगी को ही पांवों पर ही खड़ा नहीं किया बल्कि मुझे कुंठा से बाहर निकाल मुझे जीने का हौसला भी दिया। मैं संस्था का धन्यवाद करता हूं।

संस्थान से मिले अंग, पाया रोजगार

मैं किशन लाल भील, उम्र 36, अचलाना, उदयपुर का रहने वाला हूँ। आठवीं कक्षा उत्तीर्ण हूँ। मैंने सन् 1995 से बस कण्डक्टरी का कार्य करना चालू किया था। बस का रूट भीण्डर से बडी सादडी था। 22 मार्च 2000 को बस का एक्सीडेंट हो गया। उस हादसे में कानोड़ निवासी एक व्यक्ति की मौत हो गई एवं 22 लोग घायल हो गये।

उस हादसे में मेरे दोनों पैर कट गये। वहां के स्थानीय लोगों ने मुझे महाराणा भूपाल चिकित्सालय उदयपुर में भर्ती करवाया। मेरे 4 ऑपरेशन हुए परन्तु सभी असफल रहे। फिर जिन्दगी बैसाखियों के सहारे चलने लगी। मेरे पैरों की स्थिति के कारण, हादसे के चार साल बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑटिफिशयल पैर लगाये गये, मैं बिना बैसाखियों के चलने लगा। परन्तु रोजगार के लायक नहीं था। जिसमें मैं अपने परिवारों का गुजारा कर सकूं मैंने संस्थान में आकर अपनी आपबीती सुनाई।

संस्थान ने मेरे दुःख सुनकर मुझे रोजगार से जोड़ने के लिए चाय– नाश्ते का ठेला एवं आश्वयक सामग्री प्रदान की ताकि मैं अपने परिवार को भरण–पोषण कर सकूं। मैं संस्थान का बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

शिखर पर जाना है तो

बहुत समय पहले की बात है, एक सरोवर में बहुत सारे मेंढक रहते थे। सरोवर के बीचों–बीच एक बहुत पुराना धातु का खम्भा भी लगा हुआ था, जिसे उस सरोवर को बनवाने वाले राजा ने लगवाया था। खम्भा काफी ऊँचा था और उसकी सतह भी बिलकुल चिकनी थी। एक दिन मेंढकों के दिमाग में आया कि क्यों ना एक रेस करवाई जाए. रेस में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को खम्भे पर चढ़ना होगा, और जो सबसे पहले एक ऊपर पहुँच जाएगा वही विजेता माना जाएगा। रेस का दिन आ पंहुचा, चारों तरफ बहुत भीड़ थी। आस–पास के इलाकों से भी कई मेंढक इस रेस में हिस्सा लेने पंहुचे. माहौल में सरगर्मी थी, हर तरफ शोर ही शोर था।

रेस शुरू हुई

लेकिन खम्भे को देखकर भीड़ में एकत्र हुए किसी भी मेंढक को ये यकीन नहीं हुआ कि कोई भी मेंढक ऊपर तक पहुंच पायेगा हर तरफ यही सुनाई देता। अरे ये बहुत कठिन है वो कभी भी ये रेस पूरी नहीं कर पायेंगे सफलता का तो कोई सवाल ही नहीं, इतने चिकने खम्भे पर चढ़ा ही नहीं जा सकता और यही हो भी रहा था, जो भी मेंढक कोशिश करता, वो थोडा ऊपर जाकर नीचे गिर जाता।

कई मेंढक दो–तीन बार गिरने के बावजूद अपने प्रयास में लगे हुए थे पर भीड़ तो अभी भी चिल्लाये जा रही थी,ये नहीं हो सकता, असंभव", और वो उत्साहित मेंढक भी ये सुन–सुनकर हताश हो गए और अपना प्रयास छोड़ दिया। लेकिन उन्ही मेंढकों के बीच एक छोटा सा मेंढक था, जो बार–बार गिरने पर भी उसी जोश के साथ ऊपर चढ़ने में लगा हुआ था। वो लगातार ऊपर की ओर बढ़ता रहा, और अंततः वह खम्भे के ऊपर पंहुच गया और इस रेस का विजेता बना।' उसकी जीत पर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ, सभी मेंढक उसे घेर कर खड़े हो गए और पूछने लगे, "तुमने ये असंभव काम कैसे कर दिखाया, भला तुम्हे अपना लक्ष्य प्राप्त करने की शक्ति कहाँ से मिली, जरा हमें भी तो बताओ कि तुमने ये विजय कैसे प्राप्त की तभी पीछे से एक आवाज आई अरे उससे क्या पूछते हो, वो तो बहरा है अक्सर हमारे अन्दर अपना लक्ष्य प्राप्त करने की काबिलियत होती है, पर हम अपने चारों तरफ मौजूद नकारात्मकता की वजह से खुद को कम आंक बैठते हैं, और हमने जो बड़े–बड़े सपने देखे होते हैं उन्हें पूरा किये बिना ही अपनी जिन्दगी गुजार देते हैं।' 'आवश्यकता इस बात की है, हम हमें कमजोर बनाने वाली हर एक आवाज के प्रति बहरे और ऐसे हर एक दृश्य के प्रति अंधे हो जाएं... और तब हमें सफलता के शिखर पर पहुँचने से कोई नहीं रोक पायेगा.. ।

गेंदा या गुलाब: व्यापक सोच

पायल बहुत उत्सुकता से अपनी सासू माँ के पास आयी और कहा मम्मी ये लीजिये पौधे का बीज, मैं आपके लिये लायी हूँ, आपको बागवानी का बहुत शौक है न। सासू माँ ने बीज लेते हुए कहा कि तुझे कब से बागवानी का शौक चढ़ गया? पायल ने हँसते हुए कहा अपने लिये नहीं आपकी खुशी के लिये लायी हूँ। आपको देखा है मैंने, आप कितनी लगन से बागवानी करती हैं। अपने पौधों का कितना ख्याल रखती है।

सासू माँ ने बड़े प्यार से उस बीज को एक गमले में लगा दिया। और मन से उसका ख्याल रखने लगी। समय पर पानी देना, खाद डालना, धूप बारिश से बचाना, सब बहुत प्यार और लगन से सासू माँ करती थी। सासू माँ के साथ पायल भी उस पौधे का विशेष ख्याल रखती। सासू माँ को थोड़ा आश्चर्य भी होता।'

एक दिन सासू माँ ने पायल को आवाज देकर कहा देख पायल तेरे पौधे में कली निकल आयी है। पायल खुशी–खुशी दौड़ कर उस कली को देखने गयी लेकिन कली को देखते ही रोने लगी, और रोते रोते कहा, ये तो गेंदा की कली हैं मुझे तो गुलाब चाहिए था'। 'सासू माँ ने कहा कि बीज गेंदा के होंगे तो गेंदा के फूल ही निकलेंगे न, गुलाब कैसे आएंगे।' लेकिन पायल ने अपनी सासू माँ की एक भी नहीं सुनी और रो–रो कर सारा घर सर पे उठा लिया। सास–ससुर, पति किसी के भी कहने पर चुप ही नहीं हो रही थी और रोते ही जा रही थी। एक ही रट लगा रखी थी उसने कि मुझे गुलाब का फूल चाहिए था। बात इतनी बढ़ गयी कि पड़ोसी, ननद, चाची सास सबको आना पड़ा। सबने मिल कर समझाया कि तुमने जो बीज लगाया था वो गेंदा के फूल के थे, तुमने वो बीज अपनी सासू माँ को दिया, उस बेचारी ने रोप दिया,अब उन्हें क्या पता था कौन से फूल खिलेंगे–गेंदा के या गुलाब के। पायल ने अपने आँसू पोछते हुए कहा, यही बात तो मैं भी समझाना चाहती हूँ अपनी सासू माँ को कि मुझे भी तो नहीं पता था कि मेरे अंदर कौन सा बीज था। बेटा का या बेटी का। अगर मैंने बेटी को जन्म दिया है तो इसमें मेरी क्या गलती है। क्यों सासू माँ ने मेरी इस छोटी सी कली को इतना कोसा, क्यों इसके जन्म पर वे इतना रोई। इसे प्यार भी नहीं किया।' 'अपने पड़ोसियों, ननद और चाची सास को तरफ देख के कहा उस समय क्यों आप लोगों ने मेरी सासू माँ को नही समझाया, क्यों उस वक़्त आप लोग चुप थे, जब वो मेरी नन्ही कली का तिरस्कार कर रही थी और उसके जन्म पर फूट–फूट कर रोई थी।'

बीज धरती की कोख में स्थापित हो जाता है। इसके बाद अंकुरित होता है, पल्लवित और पुष्पित होता है, बढ़ता है और पूर्ण वृक्ष बन जाता है और पुनः अपनी सम्पूर्ण जीवनी शक्ति को बीज में स्थापित कर देता है, ताकि पुनः नया जन्म ले सके। एक सेब का बीज बड़ा पेड़ बनकर कई सेब देता है और एक सेब में कई सेब के बीज होते है। बिटिया, स्त्री, महिला जननी बनकर अनेकों बिटिया, स्त्री तथा महिला को जन्म देती हैं। जननी द्वारा जननी के जन्म से ही वंशवृद्धि होती है। इसे गेंदा गुलाब की तरह बेटा बेटी में न बांटे। समाज मे व्याप्त सोच को बदलने की जरूरत है ।'

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

प्यासे को पानी, भूखे को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा– कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रुपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन सहयोग

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनायें सशक्त

सहायक उपकरण वितरण	सहयोग राशि (रुपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
केलिपर	2000
बैसाखी	500

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रुपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रुपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें– 0294–6622222, 7023509999

सम्पादकीय

हरेक व्यक्ति अपने जीवन को अपने ही तरीके से जीता है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि हर व्यक्ति की अपनी निजता है, मौलिकता है। किन्तु कई बातें सामान्य तौर पर सबमें एक सी होती हैं, समाज से वे मान्य होती हैं, आचरण में उनका महत्व होता है तथा वे ही संस्कारों व सद्वृत्तियों में शुमार होती हैं।

व्यक्ति चाहे कैसे भी जीये किन्तु सहज जीवन जीने वाला ही संतुष्ट होगा। जो जीवन को भार समझकर असंतुष्ट है तथा बात–बात में तुनकता और स्वयं को कोसता रहता है, वह भी क्या इंसान है ? स्वविवेक का पालन भी मानवीय गुण और सद्वृत्ति में आता है। आज सामान्य तौर पर हम देखते हैं कि व्यक्ति किसी न किसी के प्रभाव में ही जीता है। इस कारण उसकी स्वयंप्रज्ञा तो कुन्द होती ही है उसका समुचित विकास भी अवरुद्ध हो जाता है। ऐसा व्यक्ति वैचारिक दृष्टि से ठहर सा जाता है। जीवन तो सतत गतिशील होने का नाम है, फिर ठहराव से मंजिल कैसे मिलेगी ? यही चिंतनीय है।

कुछ काव्यमय

जो जीवन को भार समझता,
उसे कहें कैसे इंसान ?
जो औरों के मत से चलता,
उसे कहें कैसे मतिमान ?
जो निष्क्रिय बना बैठा है,
वह तो बन बैठा सुनसान।
जो ठहरा है ठिठक गया है,
उसे कहें कैसे गतिमान ?

– वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

मुसीबत का सामना

एक बार स्वामी विवेकानन्द किसी पहाड़ी की तलहटी में यात्रा कर रहे थे। उस पहाड़ी पर बन्दर बहुत थे। बन्दर तो उत्पाती होते ही हैं, स्वामीजी पर 'खों–खों करते हुए झपट पड़ें। बन्दरों से डरकर स्वामीजी भाग पड़े। स्वामीजी को डरा हुआ देखकर बन्दर और अधिक तेजी से पीछा करने लगे।

उन्हें दूर से किसी व्यक्ति ने देखा। वह व्यक्ति चिल्लाया– "स्वामीजी, डरिये मत बन्दरों को डाँटते हुए खड़े हो जाइये और जमीन से पत्थर का टुकड़ा उठाने का अभिनय करिये।"

स्वामीजी ने ऐसा ही किया तो बन्दर डर कर इधर–उधर भाग गये। तब स्वामीजी ने सोचा–"सच है, मुसीबत से पीछा छुड़ाकर भागना नहीं चाहिए, बल्कि साहस के साथ उसका सामना करना चाहिए।"

अपनों से अपनी बात

संकल्प और प्रेम

लाला, धर्म के मूल को समझ जाना–बाबू। समझ जाना लाला, उल्लास रखना, उत्साह रखना, उमंग रखना, दया रखना, और ये देह–देवालय भगवान ने दिया है,

भक्ति इस देह– देवालय की,
भक्ति इस देह– देवालय की।
ये पावन पंचतत्व मोही दी,
ये पावन पंचतत्व मोही दी।।
भक्ति इस देह– देवालय की,
भक्ति इस देह– देवालय की।

लाला, इस देह–देवालय से अच्छे कार्य करना, ज्ञानेन्द्रियों का अच्छा सदुपयोग करना, ये इन्द्रिय निग्रह धर्म है। धर्म है दया, धर्म है क्षमा, धर्म है दान। गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने कहा–

प्रगट चार पग धर्म के,
कलयुग एक प्रधान।
येन केन विधि दीन्हें,
दान करे कल्याण।। नारायण..

चैनराज जी लोढ़ा साहब का दान काम आया। उनकी दया काम आयी,

उन्होंने कहा था –

देन हार कोई और है,
देन रहत दिन रैन।।
लोग भरम मुझ पर करे,
ताते नीचे नैन।।

ऐसे दया की मूर्ति चैनराज जी साहब, क्रांति कथा क्या है? ये मानव मन के बोल क्या है? ये धर्म का प्रेक्टिकल स्वरूप। ये धर्म का वो आचरण योग्य स्वरूप है।

मिटे कुरीतियाँ हृदय –हृदय में,
परिवर्तन की पवन चले,
हो उत्साह उमंग हर दिल में,
मानवता के फूल खिले।
बन्धन करूणा प्रेम दया का,
नव जीवन साकार,
उजाला हो हर मन में।।

लाला, अपनी डायरी खोल लेना भैया, ओ बाबू, ओ माता जी, ओ बहू जी अपने परिवार में बहुत प्रेम रखियेगा, यही धर्म है, धर्म है व्यवहार, धर्म हैं आचरण, धर्म है–मीठा बोलना, धर्म है– परायी निन्दा नहीं करना। सेवादास जी ने यही किया था और सेवादास जी जब बस में जा रहे थे, क्रांति कथा के बोल का सारांश आता है, बात बताये आपको, बात बताये आपको घटना बड़ी है विचित्र, मानव धर्म का महत्व देखे। सेवाराम जी की मौत टल गई–बाबूड़ा। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने कहा है– दया करो, सत्संग करो, आचरण शुद्ध रखो, मीठा बोलो, निन्दा न सुनो, कन्या भ्रूण हत्या कदापि मत करो, दहेज के लालची मत बनो। और इस प्रकार से सब में मेरे भगवान है, सबमें मेरे ठाकुर है।

– कैलाश 'मानव'

अच्छी बातों से अच्छा प्रभाव

बहुत समय पहले की बात हैं। एक जंगल के किनारे कुछ ग्वाले रहते थे। वो अपनी गाय भैंसो का दूध बेचने के लिए शहर में जाते थे। उन ग्वालों में से एक ग्वाला बहुत लालची था। वह रोज दूध बेचने जाते समय रास्ते में पड़ती नदी में से दूध में पानी मिला देता था। एक दिन जब ग्वाले बाहर से अपनी ब्रिकी का हिसाब करके पैसे लेकर घर को आ रहे थे। तो दोपहर की गर्मी से वो तंग आ गये। उन्होंने सोचा इस नदी में नहा लें। ग्वालों ने अपने अपने कपड़े उतार कर पेड़ के नीचे रख दिए। वो जो लालची ग्वाला था उसने भी नहाने के लिए अपने कपड़े उतार कर पेड़ के नीचे रख दिए।

कुछ ही देर में पेड़ से एक बन्दर उतरा उस लालची ग्वाले के कपड़े उठाकर पेड़ पर ले गया। उसने उसके जेब से रुपयों के सिक्कों की एक थैली निकाली। और एक–एक करके नदी में फेंकने लगा। वो लालची ग्वाला चिल्लाया अपने कपड़े और पैसे पुनः लेने के लिए बन्दर के पीछे दौड़ा इतनी देर में बन्दर ने बहुत सारे पैसे पानी में बहा दिए थे। लालची ग्वाला अपने भाग्य को कोसने लगा, कहने लगा देखो मेरे पूरे महीने की कमाई के ज्यादा पैसे बन्दर ने पानी में मिला दिये। इस पर उसके साथी ग्वालों ने कहा तुमने जितने पैसे पानी के कमाये थे उतने पैसे उसने पानी में मिला दिये। पानी की कमाई तो पानी में ही जानी चाहिए। उस दिन से ग्वाले को बात समझ में आ गयी, और उसने पानी मिलाना छोड़ दिया। ईमानदारी से दूध बेचने लगा तो उसकी ब्रिकी भी बढ़ गयी। उसका नाम भी अच्छा होने लगा। उसकी कमाई भी अच्छी होने लग गयी। आप पाप की कमाई मत कीजिए। आप किसी भी तरह किसी को छल कर किसी के विश्वास को ठेस पहुँचा कर, किसी को झूठ बोल कर, या फिर कपटपूर्वक किसी से पैसा हड़पने की कोशिश मत कीजिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश के कार्यालय में ही एक शर्मा काम करते थे। एक दिन उन्होंने 60 रु. लाकर कैलाश के सामने रखे और कहा कि इसे सेवा कार्य हेतु जमा कर लो। कैलाश पूछ बैठा कि –ऐसा विचार आपके मन में कैसे आया। वो बोले–उन्होंने किसी काम के लिये हनुमान जी को सवा किलो प्रसाद चढ़ाने की मनौती की थी। काम सिद्ध हो गया तो प्रसाद की राशि इस पवित्र सेवा कार्य हेतु दे रहे हैं, यह हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाने के तुल्य ही है। भीलवाड़ा के शिवनारायण अग्रवाल ने भी जब नारायण सेवा के बारे में सुना तो 600 रु. का चेक भेज दिया। उन्हीं दिनों कैलाश स्थलधीश महन्त मुरली मनोहरशरण से मिलने गया। महन्त कैलाश के कार्यों से बहुत प्रभावित थे। कैलाश ने उन्हें पई शिविर के बारे में पूरी जानकारी दी। महन्त ने उसे सुझाया कि अगली बार जब भी शिविर आयोजित करो, जिले के कलेक्टर को अवश्य अपने साथ ले जाना। कैलाश यह बात सुन कर हैरान रह गया, उसने गुरुदेव को कहा कि भला कलेक्टर जैसी बड़ी हस्ती हमारे शिविर में क्यूं कर आयेगी तब महन्त ने उसे समझाया कि कलेक्टर बहुत भले व्यक्ति हैं, उनसे समय लो, वे जरूर तुम्हें बुलायेंगे। अखबारों में शिविर का अच्छा प्रचार हो गया है। सब लोगों को इसकी जानकारी है। उन्हें शिविर के चित्र तथा अन्य बातें बताना और निवेदन करना कि अगली बार वे स्वयं उपस्थित रहेंगे तो सेवा कार्य को बहुत प्रोत्साहन मिलेगा।

कैलाश ने कलेक्टर को फोन किया, उन्होंने सहजता से समय दे दिया तो वह उनसे मिलने चला गया। महन्त मुरली मनोहर ने एकदम सही आंकलन किया था। कैलाश ने अपने कार्यों का विवरण दिया ता बहुत प्रभावित हुए और अगले शिविर में सहर्ष शामिल होने को तैयार हो गये। पिताजी की चिकित्सा जारी थी, डॉक्टरों ने भी कह दिया था कि उनके पास 6 माह से ज्यादा समय नहीं है। शिविर की तैयारियां जारी थी। सत्तू बनाने का भारी भरकम काम सिर पर था। इसके लिये रविवार का दिन निश्चित किया था, मगर शनिवार को ही तेज वर्षा आ गई। शिशु भारती के देव श्रीमाली, कैलाश के साथ थे, उन्होंने भरोसा दिलाया कि अगले दिन वर्षा नहीं आयेगी।

अंश–137